न्यू यॉर्क: हर मोड़ कुछ कहता है

दिलीप डी'सूज़ा

न्यू यॉर्क में मेरी पहली सैर की चिर स्थायी स्मृतियां हैं- पहली, जम्हाइयां लेते हुए मेट्रोपॉलिटन म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट के दर्शन, और दूसरी '72 मॉडल की डॉज कोल्ट कार को दुर्लभ पार्किंग स्पॉट में ले जाने का प्रयास। इस शहर से परिचय की शुरुआत ऐसी ही आम न्यू यॉर्क मार्का चीज़ों से होती है!

लेकिन न्यू यॉर्क इतने नज़ारों और अनुभवों का खज़ाना है कि कार पार्क करने जैसा रोज़मर्रा का काम भी खासा मज़ेदार अनुभव बन जाता है। तो उस पहली दफा मैं काफी देर तक अपनी हल्की नीली कोल्ट कार पार्क करने के लिए जगह ढूंढता रहा। आखिर मेट्रोपॉलिटन म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट के पास एक गली में जगह मिली तो मैंने कार से उतरकर अपने कदमों से नापकर कार के आकार और जगह का अंदाजा लगाया- कार की लंबाई करीब मेरे आधे कदम जितनी कम थी। रुकिए, कहीं उल्टा मामला तो नहीं था। अगले बीस मिनट मैं इंच-इंच करके कार को उस जगह पर ठूंसता रहा। यह सब न्यू यॉर्क में ही होता है। म्यूज़ियम मुझे खास प्रभावित नहीं करते। लेकिन पार्किंग की बात ही अलग है।

अगली बार न्यू यॉर्क में फिर दो खास नए अनुभव हुए। पहला, सबवे रेल में बैठकर कोनी आइलैंड जाना और वहां ढेरों झूलों पर झूलना। झूलों ने हमें ऊपर-नीचे, दाएं-बाएं, हर दिशा में धकेला और खींचा। मैं चीख रहा था और मेरी आंखों से आंसू बह रहे थे। फिर हम मनोरंजन पार्क पहुंच गए। एक झूले पर हवा ने मेरा चश्मा नाक से गिरा दिया। मैंने फुर्ती से हाथ बढ़ाकर चश्मा लपक तो लिया लेकिन हवा, झूले के वेग और मेरी बांह की ताकत की रस्साकशी में चश्मे की कमानियां टूट गईं। मैं एक मुफ़लिस, बेचारा छात्र ही था, नया फ्रेम कहां से खरीदता? तो अगले कुछ महीने मैं हर सुबह टेप से अपना बिना कमानी का चश्मा नाक पर चिपकाकर काम चलाता रहा (और तो और इसी तरह रोड आइलैंड में क्रिकेट मैच तक खेल आया)। मैंने कसम खा ली कि अब झूले पर ऐसी फुर्ती कभी नहीं दिखाऊंगा।

दूसरा अनुभव था धीरे-धीरे चलती कार में बैठे मैनहट्टन में घूमते हुए शहर की आकाश छूती इमारतों को देखना। क्रिसलर और एम्पायर स्टेट बिल्डिंगों का भव्य वास्तुशिल्प- क्या वे अब भी इस तरह की इमारत बनाते हैं। और धूप में दमकती वर्ल्ड ट्रेड सेंटर की जुड़वां मीनारें- इन्हें बहुत मनोहर तो नहीं कहा जा सकता लेकिन निगाह तो उन पर टिकती ही थी। तब क्या पता था कि एक दिन वह '11 सितंबर' जैसे शब्दों का पर्याय बनेंगीं। सालों बाद हडसन नदी के किनारे एक बेंच पर बैठा मैं उस दृश्य और धीरे-धीरे चलती कार में बैठे हुए मैनहट्टन घूमने को याद करता हूं। मेरी बांईं तरफ दूर स्टेच्यू ऑफ़ लिबर्टी दिख रही है। भोर के आकाश में भड़कीले नारंगी बादलों की चिंदियां तैर रही हैं, ऊपर हेलिकॉप्टरों की आवाज आ रही है, लहरें शांति से उठ-गिर रही हैं और पानी के विस्तार के पार न्यू जर्सी की बत्तियां जगमगा रही हैं। एक छंद में बंधे से जॉगिंग करते दो लोग सामने से गुजरते हैं।

यह एक शांत सुबह है लेकिन गहमागहमी से सनसनाते इस धड़कते शहर में एक बार फिर होने का अहसास अच्छे-खासे सुरूर का मजा दे जाता है। और मेरी पीठ के पीछे, कुछ ही दूरी पर मौजूद खालीपन के बारे में न सोचना भी असंभव है। वर्ल्ड ट्रेड सेंटर का मलबा हटाया जा चुका है, वहां साफसफाई कर दी गई है, लेकिन मैं उन चांदी जैसी गगनचुम्बी मीनारों को भुला नहीं पाता। इस शहर में आने वाला कोई भी व्यक्ति क्या कभी भी सितंबर की उस सुबह के घटनाक्रम को भूल पाएगा?

शेह शैंग्रा © ए.पी. - डब्ल्यू डब्ल्यू पी.

मैं सोचता हूं कि 11 सितंबर की उस सुबह मैं यहां होता तो मैंने स्वतंत्रता की मूर्ति को देखा होता, फिर जर्सी तट को निहारता, जॉगिंग करती जोड़ी को देखता और एक अप्रत्याशित आवाज सुनकर गर्दन मोड़ता और महाविनाश से साक्षात होता। बार-बार ध्यान आता है कि उस सुबह मैं यहां होता तो शायद जिंदा न बचता। मेरी बाईं ओर स्वतंत्रता की प्रतीक लिबर्टी की विशाल प्रतिमा खड़ी है, आकाश से व्रजपात की तरह गिरे आतंकवाद की स्मृति मेरे पीछे है। इस शहर और देश ने दोनों के बीच तालमेल कैसे बैठाया होगा?

न्यू यॉर्क के बारे में अक्सर कहा जाता है कि यहां देखने को इतना कुछ है कि आपकी इंद्रियां थक जाएं। सालों मैं इसका मतलब यह लगाता रहा कि यहां गंधों, ध्वनियों, लोगों और दृश्यों की भरमार है। मैं पार्किंग और रोलर कोस्टर के रोमांच से आगे नहीं बढ़ पाता था। आज मैं जानता हूं कि यह भय की स्मृति और आतंक के विचार से भी रूबरू कराता है।

पास ही एक ऐसी स्मृति का मंदिर है जिसके यहां होने की अपेक्षा मैंने कभी नहीं की थी। लेकिन यह न्यूयॉर्क है न....। सरसरी निगाह से देखने पर यह एक छोटी-मोटी पहाड़ी सा दिखता है, समुद्रतट की ओर वाली ढलान पर सुंदर, शालीन बगीचा है। ऐसा कुछ खास नहीं जिसे सैलानी रुककर देखना चाहें। लेकिन अगर कोई उत्सुकता से भर उठे तो ढांचे का चक्कर काट कर, बाजू की गली में मुड़कर, हडसन की ओर जाते ढलान पर चढ़कर और फिर मुड़कर रास्ता ट्यूबलाइटों से जगमगाते गुफा जैसे प्रवेशद्वार पर पहुंचेगा जहां दीवारों पर तमाम तरह की चीजें लिखी हैं। पत्रों, खाना बनाने की विधियों, आत्मकथाओं आदि से लिए गए उद्धरण जिनका सिलसिला दो मील तक चलता है। मैनहट्टन की चहलपहल के बीच, वेसी स्ट्रीट और नॉर्थ एंड एवेन्यू के कोने पर, यह अजीब सी पहाड़ी और शब्दों वाली गुफा, असल में क्या है? यह आयरिश हंगर मेमोरियल है- 19वीं सदी के मध्य के आयरलैंड के आलू के अकाल के शिकारों का स्मारक। आयरिश लोगों ने इस महाविपत्ति को 'एन गोर्टा मोर' कहा, यानि 'बड़ी भूख'। यह महात्रासदी डेढ़ सदी बाद भी आयरिश लोगों के मानस पर खुदी है। 'बड़ी भूख' के हमले से पहले आयरलैंड एक फलता-फूलता देश था- वहां अर्थतंत्र और लोग, दोनों ही फलफूल रहे थे। अकाल ने हज़ारों लोगों की जान ले ली, गांव खाली हो गए, बहुत से लोग अमेरिका चले गए और न्यूयॉर्क सिटी में जा बसे।

जुलाई 2002 में जब 11 सितम्बर के घाव अभी ताज़ा होंगे, इस स्मारक का लोकापर्ण करते हुए तत्कालीन गर्वनर जॉर्ज पताकी ने न्यूयॉर्क के सन्दर्भ में कहा, ''यह वह महान बन्दरगाह और शहर है जिसने अकाल से बच निकले ढेरों लोगों के लिए नए जीवन, नई आशा और उनके खुद के और हमारे देश के लिए एक नए सुबह के दरवाज़े खोले।''

'हमारा देश'? जो हुआ उसके बाद भी? अभी जब घाव ताज़े ही होंगे और हर परदेसी पर शक होगा, तब भी 'हमारा देश'? यह शहर ही आप्रवासियों के लिए अपना दिल और बांहें खोलकर कह सकता है कि वे नया जीवन और नई आशा लेकर आते हैं। और सच भी यही है।

हंगर मेमोरियल कोई लोकप्रिय दर्शनीय स्थल नहीं है। लेकिन यह बहुत खास ढंग से न्यू यॉर्क के चरित्र और पहचान से जुड़ा है। और इसे देखा जाना ज़रूरी है। यहां घूमते और दीवारों पर मौजूद उद्धरण पढ़ते हुए आप महाविनाश के बारे में सोचने से बच नहीं पाते, घास से ढकी यह ढलान और थोड़ी ही दूर पर स्थित वह साफसुथरा गड्ढा- दोनों ही त्रस्त कर देने वाली त्रासदियों की यादगारें हैं। आलू का अकाल अपने युग में 11 सितम्बर के आतंकी हमले से कम स्तब्धकारी नहीं था। आकाश से उल्कापिंडों की तरह गिरे जेट विमानों की तुलना में आलू के अकाल के कारण बहुत बड़े पैमाने पर, बहुत बड़े स्तर पर, अधिक लोग मारे गए।

न्यू यॉर्क: हर मोड़ पर सोचने को मजबूर करे, हर कोने पर नए अर्थों से रूबरू करे।

क्या ये ही 11 सितम्बर की स्थायी यादें है?

दिलीप डी 'सूज़ा कम्प्यूटर वैज्ञानिक रहे हैं और अब लेखन से जुड़े हैं। वह मुम्बई में रहते हैं। इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजिए।

ग्रेगरी बुल © ए.पी. - डब्ल्यू डब्ल्यू पी.

ऊपर बाएं: वर्ल्ड ट्रेड सेंटर स्थल का ऊपर से लिया गया चित्र। बाईं ओर हडसन नदी दिखाई दे रही है।

ऊपर: 11 सितंबर के हमले से संबद्ध श्रद्धांजलि केंद्र में दीवार पर हमले में मारे गए लोगों के चित्र।

दाएं: न्यू यॉर्क में आयरिश हंगर मेमोरियल में ग्रामीण आयरिश इलाका दिखाने के लिए बनाए गए विशेष क्षेत्र में खड़ा एक व्यक्ति।